International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(I), October - December, 2023, pp. 68-70

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया की सामाजिक विश्वसनीयता

लोकेश कुमार शर्मा*
डॉ. मंजू शर्मा**

सार

सोशल मीडिया का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दिखाई पड़ रहा है किंतु इसका सबसे अधिक प्रभाव हमें शिक्षा के क्षेत्र में किशोर और युवावस्था पर दिखाई देता है। किशोर मन चंचल होता है क्योंकि यह अवस्था झंझावात और तूफान की अवस्था भी कही जाती है। इस अवस्था में वह सरलता से नवाचारों को स्वीकार कर लेता है और अपना व्यवहार भी तत्काल प्रदर्शित कर देता है। प्रस्तुत शोधलेख द्वारा यह बताने का प्रयास किया जा रहा है कि शिक्षा की अब तक इस यात्रा में शिक्षा के प्रसार और उसके स्वरूप के परिवर्तन में शैक्षिक अभिकरणों की विशेष भूमिका रही है जिसमें सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव के कारण पूर्णतया इसकी सामाजिक विश्वनीयता पर प्रश्नचिन्ह लग गया है।

शब्दकोशः *शिक्षा, सोशल मीडिया, सामाजिक विश्वसनीयता।*

प्रस्तावना

शिक्षा सभ्य समाज की प्राथमिक आवश्यकता एवं महत्वपूर्ण इकाई है क्योंकि किसी भी राष्ट्र और समाज के विकास की आधारशिला वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक शिक्षा ही रही है। आज वैश्वीकरण के युग में जब भारत पुनः विश्वगुरु बनने जा रहा है तो इसका सबसे बड़ा कारण हमारी शिक्षा रही है। हमने 1947 में भारत को दो भागों में विभाजित होते हुए देखा है। एक भारत और दूसरा पाकिस्तान। यदि आज विश्व में भारतीय विचारधारा को महत्व दिया जा रहा है तो भारतीय शिक्षा और संस्कृति के कारण दिया जा रहा है। जबकि पाकिस्तान की वर्तमान स्थिति किसी से छिपी नहीं है। पाकिस्तान ने शिक्षा के बदलते परिवेश को स्वीकार नहीं किया है जबकि भारतीय समाज ने शिक्षा के आधुनिकीकरण को स्वीकार किया है। शिक्षा का वर्तमान स्वरूप उसके विगत स्वरूप से हमेशा भिन्नता लिए रहा है क्योंकि शिक्षा के प्रसार में सूचना प्रसारण तथा उसकी ग्रहणशीलता का प्रभाव सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक हैं। शिक्षा के इस बदलते परिदृश्य में मीडिया की अग्रणी भूमिका रही है। इसका परिणाम यह हुआ है कि वृहद समाज सूचना प्रौद्योगिकी के फलस्वरुप संकुचित होकर भूमंडलीय आधार पर एक केंद्र के रूप में संचालित हो गया है।

सोशल मीडिया

समाचार पत्र एवं टीवी चौनलों के बाद मीडिया का एक नया रूप समूचे विश्व के सामने आया वह है – इंटरनेट। इंटरनेट की स्वतंत्रता के नाम पर आज मीडिया प्रत्येक व्यक्ति के हाथ और दिमाग में स्थाई स्थान बना चुका है। व्यक्ति घर से निकलने पर अपने पास मोबाइल ले लिया है या नहीं सुनिश्चित करके निकलता है। जहाँ प्रिंट मीडिया को अपना स्थान बनाने के लिए कई दशक लगे वही मीडिया का वर्तमान रूप सोशल मीडिया कुछ ही सालों में विश्व व्यापी हो गया है। मीडिया संचार का औजार है जैसे; रेडियो, अखबार। इसलिए सोशल मीडिया एक तरह से दोनों तरफ से आगे जाने वाली 'रोड' है जो आपको अपनी बात कहने का अवसर देता है।

* शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका व सहायक आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।

देश के प्रत्येक गांव और ढाणी–ढाणी तक सोशल मीडिया पहुंच है। आज दुर्गम स्थान का निवासी शिक्षित अथवा अशिक्षित, पुरुष या महिला, बच्चा हो या बड़ा ये सभी सोशल मीडिया के अनुगामी हैं। सोशल मीडिया में लोग एक दूसरे से फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, माइक्रो ब्लॉगिंग साइट्स, विकिपीडिया, ब्लॉग आदि के द्वारा व्यक्ति उपयोगिता के नए आयाम प्राप्त कर रहा है। सोशल मीडिया कोई भी डिजिटल साधन से प्रसंस्कृत या प्राप्त होने वाली सेवाओं का एक शामिल और समग्र स्वरूप है। सोशल मीडिया की एक खासियत यह भी है कि इसकी कोई भौगोलिक सीमा का निर्धारण नहीं है। सोशल मीडिया आज सूचनार्थ के रूप में भी कार्यरत है। सूचनार्थ के अलावा रोजगार के नए अवसर और अनजाने लोगों से दोस्ती और प्रतिभा निखारने का मंच बनता जा रहा है। लोग अपने नित्य जीवन के कई महत्वपूर्ण कार्य घर या ऑफिस से बैठे–बैठे इस सोशल मीडिया के माध्यम से कर लेते हैं। यह अति विशिष्ट लोगों तक अपने विचार रखने का प्लेटफार्म भी बनता जा रहा है।

मीडिया समाज के कमजोर लोग व उपभोक्ताओं का सहायतार्थ मंच भी है। सोशल मीडिया विगत वर्षों या यूं कहें कि कोविड–19 के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने में प्रयासरत है। आज शिक्षा के प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरलीकृत करने में सबसे अधिक प्रभावशाली संचार का माध्यम है और इससे शिक्षा व्यवस्था भी प्रभावित हुई है। कोविड–19 में शिक्षा की व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक ऑनलाइन–शिक्षा प्रदान की गई। बच्चों को घर बैठे कक्षा संचालन और परीक्षाओं का संचालन इंटरनेट के माध्यम से किया गया। इसी ऑनलाइन कक्षा संचालन से ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बच्चे मोबाइल से वेबसाइट से और शैक्षिक एप्प से जुड़े।

यही से प्रारंभ हुआ बाल्यावस्था की भी सोशल मीडिया से जुड़ना। संचार के इस प्रौधौगिकी युग में सोशल मीडिया ने भारतीय समाज पर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी प्रभावशीलता को दिखाना प्रारंभ किया। शिक्षा में इसके प्रभाव नकारात्मक और सकारात्मक दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सोशल मीडिया के कारण बच्चों का व्यवहार प्रभावित हो रहा है। बच्चों के व्यवहार में आक्रामकता परिलक्षित होती है।

जर्मनी के प्रख्यात समाजशास्त्री 'हार्बेर्ट मारकोज़े' का कहना है कि, ''संचार मीडिया के प्रचार के परिणाम स्वरूप आने वाला उपभोग मनुष्य में एक अद्वितीय प्रवृत्ति उत्पन्न करता है और उसे पहले से अधिक समाज में हित साधने के वातावरण पर निर्भर कर देता है।'' वर्तमान में सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग के कारण किशोरों पर कुछ दुष्प्रभाव देखे जा रहे हैं। जिससे शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया की सामाजिक विश्वनीयता का होना अभी पूर्णतया नहीं कहा जा सकता लेकिन वर्तमान समय की मांग को देखते हुए सोशल मीडिया को भविष्य में अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता।

सामाजिक विश्वसनीयता

मानव सदैव सामाजिक तथा ज्ञान पिपासु रहा है। वर्तमान में मानव की इस प्रवृत्ति को शांत करने का सबसे अच्छा माध्यम इस वैश्वीकरण के युग में सोशल मीडिया निभा रहा है। सोशल मीडिया का सबसे अधिक प्रभाव किशोर अवस्था एवं युवावस्था इन दोनों पर पड़ा है। यह प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का है। संचार के इस आधुनिक युग में औद्योगिकरण और नगरीकरण ने कई तरह के सामाजिक परिवर्तनों को आरंभ किया है। इससे अलग–अलग प्रकार के नवीन मूल्यों का जन्म हुआ। सोशल मीडिया पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना अश्लीलता का भरपूर कंटेंट, नशे, मादक पदार्थ, अन्य आपत्तिजनक हजारों पोस्ट या ब्लॉग लिखे मिल जाते हैं। आज सोशल मीडिया से किशोर एवं युवाओं के चिपके रहने से उनकी दिनचर्या प्रभावित होने के साथ–साथ उनका मानसिक अवसाद जैसी गंभीर समस्या खड़ी होने लगी हैं। अश्लील कमेंट्स के कारण अधिकतर किशोर युवतियां अवसाद ग्रसित हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म से कई बार निजता प्रभावित होने का खतरा बढ़ गया है।

सोशल मीडिया पर अधिकतर खबरें झूठी और भ्रमित करने वाली होती हैं। इस प्रकार से यह देखा जा रहा है कि सोशल मीडिया का समाज पर सकारात्मक कम नकारात्मक प्रभाव अधिक दिखाई देने वाला रहा है। सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन ठगी, हनी ट्रैप, राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़, ब्लैकमेलिंग आदि की जा रही है। समाज की सभ्यता एवं संस्कृति को एक अलग विचारधारा से प्रस्तुत करना, देवी–देवताओं को अपमानित करना आदि कारण ऐसे हैं जो सोशल मीडिया और समाज को नकारात्मकता देने में सबसे आगे हैं। फेक न्यूज़ की असाधारण वृद्धि लगभग 250 प्रतिशत दर्ज की गई है। भारत में सोशल मीडिया से अफवाहों को हवा दी जाती है। किसी शहर में तनाव फैलने पर सबसे पहले इंटरनेट को बंद किया जाता है। सोशल मीडिया दुनिया के ऑनलाइन वर्कर्स को आईडेंटिटी थेफ्ट यानी पहचान की चोरी एक नया संकट है। जिससे विश्व के लोग इस समस्या से जूझ रहे हैं ।

मेरा दृष्टिकोण

मेरा मानना है कि भारतीय समाज पूर्णतया इस सोशल मीडिया पर विश्वास नहीं कर पा रहा है। इसका एक कारण समाज की विचारधारा भी है। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इसका उपयोग जरूरी है लेकिन इसके प्रयोग में सावधानी उठानी होगी क्योंकि इंटरनेट पर अश्लील साइटों की भरमार से किशोर युवक–युवतियों पर इसका दुष्प्रभाव देखा जा रहा है। सरकार द्वारा इन साइटों पर प्रतिबंध और शैक्षणिक वेबसाइटों को बढ़ावा देना चाहिए। ऐसे सॉफ्टवेयर तैयार किए जाएं जिससे बच्चे शैक्षिक एप्प के अलावा कोई अन्य एप्प या साइट ना देख सके।

निष्कर्ष एवं उपसंहार

वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इंटरनेट के माध्यम से विकास की जो गति प्रदान हो रही है इसमें मौलिक गुणों, नैतिकता की विशेष कमी दिखाई देती है। आधुनिकरण के युग में विकास की धारा जब निकल पड़ी है तो मानव मस्तिष्क तथा प्रतिभाओं की अपेक्षा नहीं की जा सकती। 'डेनियल लेर्नर' ने विकास की प्रक्रिया में सोशल मीडिया के साथ–साथ शिक्षा जागरूकता एवं संगठन को भी प्रभावित तत्व निरूपित किया है। परंतु लोगों एवं विशेषकर ग्रामीण और शिक्षा विभाग में जागरूकता शिक्षा एवं संगठन की कमी के कारण भी सोशल मीडिया पर सामाजिक विश्वनीयता प्राप्त नहीं हो रही है। सोशल मीडिया को सामाजिक विश्वसनीयता प्राप्त नहीं हो रही है ।

भारत गांवों का देश है। आज भी भारत की अधिकांश जनसंख्या गांव में निवास कर रही है और उनकी विचारधारा भी रूढ़िवादिता की है ऐसी परिस्थितियों में सोशल मीडिया पर उपस्थिति दर्ज करने वाले लोगों की जिम्मेदारी काफी अधिक हो जाती है। भारत की वर्तमान आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं शिक्षा व्यवस्था आदि में नैतिकता संरचित है। आंचलिक या ग्रामीण विकास किये बिना देश के समग्र विकास की संभावना प्रतीत होती नजर नहीं आ रही है। निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि सोशल मीडिया वर्तमान युग के लिए अपरिहार्य आवश्यकता है और सोशल मीडिया के माध्यम से अनेक क्षेत्रों में विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नए युग का आरंभ हुआ है। यह एक नवाचार है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bennett, W. Lance, Chris Wells, and Deen Freelon. 2011. "Communicating Civic Engagement: Contrasting Models of Citizenship in the Youth Web Sphere." Journal of Communication 61(5):835–56.
2. Joyce, Mary, ed. 2010. Digital Activism Decoded: The New Mechanics of Change. New York: International Debate Education Association.
3. Kanter, Beth, and Allison Fine. 2010. The Networked Nonprofit: Connecting with Social Media to Drive Change. John Wiley & Sons.

❖◆❖